भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए २ से ८ नवंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(५१ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	अक्टूबर-नवंबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)							
दिनांक	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	साप्ताहिक परामर्श
पंजाब								फसल फलन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। अधिकांश गूलर खुल रहे हैं और कपास चुनाई कार्य प्रारंभ हो चुका है। अतः इस अवस्था में सफ़ेद मक्खी की रोकथाम के लिए कोई उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। किसानों को साफ-सुथरी कपास चुनने की सलाह दी जाती है। चिपचिपी कपास से साफ-सुथरी चुनी गई कपास को अलग रखें। दोनों प्रकार की कपास को मिलाएँ नहीं। पहली चुनाई की कपास को अलग भंडारित करें। खेत में एक तिहाई गूलर खुलने के बाद फसल की सिंचाई न करें। सड़े हुए गूलरों की कपास न चुनें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से बचाने के लिए कपास को सुखाकर भण्डारित करें। राजस्थान के कुछ भागों में पिछेती बुआई की गई कपास अथवा लंबी अवधि वाले संकरों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर `से अधिक वाले संकरों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर के करीब है। उत्तरी भारत में हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी का नुकसान दर्ज किया गया है। इस सूँडी का नुकसान कुछ स्थानों पर 60% तक दर्ज किया गया है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल की अवधि को ज्यादा आगे न बढ़ाएँ। कपास की लकड़ियों और फसल अवशेष को जमा करके न रखें। गूलर की सूँडियों से क्षतिग्रस्त कपास को भी संग्रह करके न रखें।
भटिंडा	**0**	**0**	**0**	0	0	0	0	
फिरोजपुर	**0**	**0**	**0**	0	0	0	0	
मुकतसर	**0**	**0**	**0**	0	0	0	0	
मानसा	**0**	**0**	**0**	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	**0**	**0**	**0**	0	0	0	0	
हिसार	**0**	**0**	**0**	0-	0	0	0	
फ़तेहाबाद	**0**	**0**	**0**	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	0	
श्रीगंगानगर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	0	
बांसवाड़ा	**0**	**0**	**0**	**0**	**3**	**0**	0	
उड़ीसा								कपास की फसल इस समय गूलर विकास तथा परिप क्वावस्था में है। कहीं-कहीं रस चूसक कीटों, *स्पोडोप्टेरा,* धब्बेदार सूँडी, तथा अमेरिकन गूलर की सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से नीचे दर्ज किया गया है। रस चूसक कीटों में जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से ऊपर पाया गया है। छिट-पुट स्थानों पर जीवाणु पत्ती धब्बा रोग का प्रकोप भी रिपोर्ट किया गया है। परिशिष्ट में दी गई सिफ़ारिशों के अनुसार नाशीकीटों व रोगों की रोकथाम के उपाय करें। बचे हुए हरे गूलरों के विकास के लिए फसल पर 1.5% डी.ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का छिड़काव करें। शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करने से फसल में गूलर धारण क्षमता बढ़ेगी। इससे अंततः उपज में वृद्धि होगी। लाल पत्ती रोग की रोकथाम के लिए 10 ग्रा. यूरिया के साथ 10 ग्रा. मेग्नीशिय सल्फेट प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। पूरी तरह खुले हुए गूलरों से ही सुबह 10.0 बजे के बाद कपास चुनें। पहली चुनाई की कपास को ठीक से सुखाकर भंडारित करें। परिशिष्ट में दी गई सिफ़ारिशों के अनुसार मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की समस्या से निपटें।
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0	
गुजरात								फसल इस समय पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। **गुलाबी सूँडी :** बीटी तथा गैर बीटी दोनों ही प्रकार की फसल की निगरानी किसान भाई करते रहें। बीजी II कपास के हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति सूरत, भड़ोंच, वडोदरा, अहमदाबाद, भावनगर तथा अमरेली में क्रमशः 52-65%, 22-88%, 8-72%, 32-64%, 8-75% तथा 40-75% के मध्य पाई गई। गैर बीटी कपास में गुलाबी सूँडी की क्षति 3 स्थलों सूरत, भड़ोंच तथा आनंद में क्रमशः 52, 60 तथा 48% रिकार्ड की गई। *जी. हर्बेशियम* देसी कपास में
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	

सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम पाया गया है। नवंबर-दिसंबर में प्रकोप तथा हानि के बढ़ने की संभावना है। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए किसानों को 5-6 फिरोमोन ट्रैप/हे. की संख्या में फसल में लगाने की सलाह दी जाती है। इस महीने नवंबर के अंत तक 3 पतंग/ ट्रैप/रात्री लगातार 3 रातों तक अथवा/ और हरे गूलरों में विकासशील गुलाबी सूँडियों के साथ 10% क्षति के आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचने पर संश्लेषित पाइरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें। गुलाबी सूँडी की रोकथाम के उपाय नहीं करने पर इसका अधिक नुकसान हो सकता है। कीटनाशक मिश्रणों का प्रयोग कभी न करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ेगा जिससे कपास चिपचिपी हो जाएगी। किसान भाई फसल को दिसंबर तक समाप्त कर दें , इससे आगे न बढ़ाएँ। फसल को जल्दी समाप्त करने से गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम होगा तथा बीटी कपास में गूलर की सूँ डियों के प्रति प्रतिरोधकता कम होगी। पिछले वर्ष के कपास की लकड़ियों के ढेर खेतों की मेढ़ों पर दिखाई दे रहे हैं। इन्हें तुरंत नष्ट कर दें। भंडार में अथवा घर में रखा कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंगों का स्त्रोत हो सकता है। पुराना बीज क्षतिग्रस्त होने पर नष्ट कर दें।
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	7	4	0	0	0	0	इस समय फसल पुष्पन , प्रारंभिक कली अवस्था , गूलर निर्माण तथा गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। जैसिड और सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से ऊपर लेकिन ए फिड तथा फूलकीट का प्रकोप विषेशरूप से पिछेती फसल तथा लंबी अवधि के संकरों में आर्थिक हानि सीमा से कम है। परिशिष्ट में दी गई सिफ़ारिशों के अनुसार किसान भाई आवश्यक होने पर रोकथाम के उचित उपाय कर सकते हैं।
धार	0	5	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	4	13	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	3	5	0	0	0	पुष्पन का दूसरा दौर प्रारंभ हो चुका है। बीटी कपास में लाल पत्ती रोग देखा गया है। लाल पत्ती रोग के लिए सवेदनशील संकरों की पहचान करके किसान भाई आगामी वर्ष में उनकी खेती न करें। पत्तियों के लाल होने की समस्या की किसान भाई निगरानी करते रहें और आवश्यक होने पर रोकथाम के उपाय करें। सफेद मक्खी की संख्या कुछ क्षेत्रों में विशेष रूप से उन खेतों में जहाँ पाइरेथ्राइड अथवा कीटनाशक मिश्रणों का छिड़काव किया गया है, उन खेतों में अधिक है। कुछ क्षेत्रों में फसल पर पत्ती धब्बा रोग देखा गया है। अच्छा बाजार भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। पिछेती बोई गई फसल में संरक्षित सिंचाई दें। इसके साथ ही 2% यूरिया अथवा2% डी. ए.पी. का छिड़काव पुष्पन अवस्था में तथा गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। फिरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। यदि ट्रैप में 8 पतंग/ ट्रैप/रात्री सतत 3 रातों में आने पर सिफ़ारिश किए गए नियंत्रण उपायों को अपनाएँ। बी. जी I बी.जी॰ II तथा गैर बीटी कपास मे हरे गुलरों में सूँडियों के नुकसान और संख्या के लिए विशेषत: गुजरात से लगे जिलों में निगरानी करते रहें। उन खेतों में भी गूलर की सूँ डियों के लिए निगरानी करते रहें जिन खेतों में फसल अगले वर्ष मार्च-अप्रैल तक रखते हैं। बीजी II में अनुसंधान फार्म पर गूलर की गुलाबी सूँडी की क्षति 5% से भी कम देखी गई है। बीटी कपास में गुलाबी सूँडी की क्षति 30% तक पाई गई है। देसी कपास में अधिकतर स्थानों से पहली चुनाई हो चुकी है। **क्रॉप-साप रिपोर्ट :** जैसिड की संख्या जहाँ आर्थिक हानि स्तर को पार कर गई है वे हैं- जालना जिले के 30% से भी आधिक गांवों में, 18.42% गांवों में चंद्रपुर में, 17.36% गांवों में नांदेड़ जिले में, और औरंगाबाद के 14.28% गांवों में। जिन क्षेत्रों में जैसिड संख्या 10% से भी कम गांवों में थी, वे हैं नागपुर 8.48% गावों में, हिंगोली 6.32% गावों में, बुलढाणा 5.12% गावों में , तथा अकोला 3.93% गावों में , अमरावती जिले में 14.43% गावों में , सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर रही। लाल पत्ती रोग से प्रभावित गावों की संख्या इस प्रकार रही नागपुर जिले के 63.39% गावों में , परभणी 44.25% गावों में , अहमदनगर 43.95% गावों में , यवतमाल 40.18% गावों में , धुले जिले के
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	4	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	8	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	

								20.04% गावों में, चंद्रपुर के 30.25% गावों में, गडचिरोली के 18.18% गावों में, वर्धा के 16.81% गावों में, बुलढाणा के 16.66% गावों में, अमरावती के 15.84% गावों में, वाशीम के 10.15% गावों में, औरंगाबाद के 03.72% गावों में, बीड जिले के 14.62% गावों में, जालना के 9.51% गावों में, नांदेड के 6.58% गावों में, तथा अकोला के 6.11% गावों में।
तेलंगाना								फसल पुष्पन से चुनाई अवस्था के मध्य है। कम नमी तथा दिन के अधिक तापमान के कारण फसल की पत्तियों का पीला पड़ना, सूखना, मुरझाना तथा परिपक्वावस्था से भी पहले गुलरों का खुलना देखा जा रहा है। कम मृदा नमी प्रतिबल के कारण धीमी वृद्धि तथा उथली मृदा में गुलरों का आकार छोटा रह जाना, आदि देखे गए हैं। नत्र तथा पोटाश उर्वरकों की विखंडित मात्रा यथासंभव दी गई। यूरिया 2%+1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का दो बार 7 से 10 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिड़काव पत्तियों के पीले अथवा लाल होने की समस्या के समाधान के लिए करें। सूखे का अंतराल लंबा होने पर कली, पुष्प तथा गूलर झड़न की रोकथाम के लिए प्लोनोफिक्स 0.25 मिली./ली.+1-2%पोटेशियम नाइट्रेट का 7 से 10 दिनों के अंतराल पर दो बार फसल पर छिड़काव करें। फसल पर छिड़काव सुबह अथवा शाम के समय करें। डी.ए.पी. 1-2% अथवा पोटेशियम नाइट्रेट 2% का 7 से 10 दिनों के अंतराल में पुष्पन से गूलर विकास अवस्था के मध्य फसल पर पोषकों के रूप में छिड़काव करें। रस चूषक कीटों के प्रकोप में जैसिड संख्या 0.3से 1.45/3 पत्तियाँ, सफ़ेद मक्खी 0.65 से 6.70/ 3 पत्तियां, फूलकीट 0.35 से 1.64/3 पत्तियां, एफिड 1.40-2.10/ 3 पत्तियां, दर्ज की गई। *राइजोक्टोनिया* जड़ गलन की रोकथाम के लिए प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर आक्सी–क्लोराइड @ 3.0 ग्रा./ली. पानी का घोल डालें। फफूंदजनित पत्ती धब्बा रोगों की रोकथाम के लिए प्रोपिकोनजोल @ 1.0 मिली।/ली. पानी अथवा मेन्कोंजेब + कार्बोडेजिम @ 2.0 ग्रा. /ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। अधिक तापमान के कारण रस चूसक कीटों तथा *स्पोडोप्टोरा* का प्रकोप देखा जा रहा है। इन की रोकथाम के लिए परामर्शी के परिशिष्ट में दिए गए नियंत्रण उपायों को अपनाएँ।
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
कारिंगर	3	5	0	0	0	0	0	
खम्मन	6	9	6	7	5	3	0	
करीमनगर	3	5	0	0	0	0	0	
नालगोंडा	6	6	4	0	5	0	0	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	6	4	5	3	6	0	0	
प्रकासम	14	7	25	3	0	3	0	
कर्नाटक								देरी से बुआई किए गई बीटी संकरो में मिज मक्खी तथा मिरिड बाग का प्रकोप दर्ज किया गया है। राज्य कृषि विश्वविद्यालय द्वारा सुझाए गए उचित उपायों द्वारा इनकी रोकथाम करें। पानी में घुलनशील 19:19:19 (1%) उर्वरक तथा 1.0% मेग्नेशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव किया जा सकता है। रात का तापमान अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में गिर रहा है और ठंडा मौसम शुरू हो रहा है। इससे बीटी कपास पर लाल पत्ति रोग बढ़ सकता है। देसी कपास उत्पादक जिलों के कुछ क्षेत्रों में देसी कपास क़िस्मों में दहिया रोग देखा जा रहा है। इसकी रोकथाम के लिए कार्बेन्डेजिम + मेन्कोजेब (SAAF)@ 2 ग्रा./ ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। अधिकांश क्षेत्रों में फसल शीर्ष गूलर खुलने की अवस्था में है। सुबह की ओस के कारण भीगी कपास को सुबह जल्दी न चुनें। धूप निकलने के बाद ही कपास चुनने का कार्य प्रारंभ करें। जिन खेतों में कपास की चुनाई हो चुकी है उन खेतों में सिंचाई न करें। सिंचाई करने से नई वृद्धि होकर नाशीकीटों और रोगों का प्रकोप फसल को प्रभावित करेगा। कपास की लकड़ियों को जलाने के काम में लेने के स्थान पर कम्पोस्ट बनाएँ। इसके भी विकल्प के रूप में कपास की लकड़ियों को ट्रैक्टर चलित शलेसर चलाकर खेत की मिट्टी में मिला दें।
धारवाड़	6	8	3	5	0	0	0	
हवेरी	25	6	10	8	0	0	0	
मैसूर	13	19	10	19	8	0	3	
तमिलनाडु								इस समय फसल पुष्पन अवस्था में है। दूब घास, *पार्थेनियम* तथा *ट्रायंथेमा पोर्तुलेकेस्ट्रम* जैसे प्रमुख खरपतवारों के नियंत्रण के लिए अंकुरण- पश्चात खरपतवारनाशकों का अनुप्रयोग किया गया है। नाशीकीटों व रोगों का प्रकोप फसल पर नहीं देखा जा रहा है। एफिड का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज किया गया है।
पेरंबलुर	5	14	13	41	10	10	7	
सेलम	35	23	20	41	9	11	4	
त्रिची	15	20	74	85	33	71	29	
विरुडुनगर	43	23	74	85	42	71	29	

आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80
वर्षा मि.मी					

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड़ (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय,	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com

	धारवाड़ (कर्नाटक)		
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संसकरण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
uanandankar@gmail.com